रिकॉर्ड:- दूर देश का रहने वाला... ओम शान्ति प्रातःक्लास 18-5-67

रूहानी बच्चों को रूहानी बाप समझाते है स्कूल अथवा कालेज मे कोई तो अच्छी रीती दिल लगा कर
पढ़ते है। समझते है कि पढ़ कर अच्छा पद पाना है। हम स्टुडेन्टस है। यहाँ भी बच्चे जानते है कि
बरोबर हमको पढ़ाने वाला बेहद का बाप है। बेहद का वर्सा देते है। बाप ने समझाया है कि इनको
नर से नारायण बनने की सच्ची-2 कथा कहो। सत्य नारायण की कथा कहो। तीजरी की कथा कहो। भक्ति
मे यह सब कथाये जन्मजन्मान्तर सुनी है। तीजरी की कथा अमरनाथ की कथा आद का कोई अर्थ नही
समझते है। वो है अमरपुरी यह है मृत्यु लोक। यह भी तुम्ही समझते हो। तुम्हारे मे भी कोई तो बिल्कुल
ही नही जानते है। पूछेंगे अमर पुरी कहा है?तो कह देंगे ऊपर मे। जो कायदे अनुसार नही पढ़े है
भल सामने बैठे है परन्तु धारना नही है,क्या पढ़ रहे है बुधी ही मे नही आता है। ऐसे-2 को भी
कई ब्राहमिणयाँ ले आती है। तो भक्ति मार्ग मे जन्मजन्मान्तर तुम झूठी कथाये सुनते आये हो। बहुत
प्यार से सुनते थे।जैसे-2 हालात वाले लोग होंगे सुननेवाले वैसे-2 ही मण्डप बनवायेंगे बैठ कर सुनने के
लिये। बाप तो कहते है कि मैतो बिलकुल ही साधारन तन मे आता हूँ। मनुष्यों की बुधी तो
बिलकुल ही मारी हुई है। जिनको वे आधा कल्प बुलाते है वोहि आकर पढ़ाते है यह कोई को
भी मालूम नही है। अभी तो तुम प्रैक्टीकल मे पढ़ रहे हो। यह है ईश्वरिय पढ़ाई। ईश्वर स्वंय पढ़ाते है।
गीता मे भगवानोवाच्य है परन्तु कृष्ण का नाम डालने कारण सारी खण्डन हो गई है। बाप कहते है कि
भक्ति मार्ग के शास्त्रपढ़ते-2 सुनते-2तुम रावण सम्प्रदाय के बन गये हो। अकासुर ,बकासुर, हरणाकश्यप
यह अक्षर किसने कहे? बाप ने कहा है नाँ। वो तो सिर्फ शास्त्र पढ़ते रहते है। गायन तो अभी का है
नाँ। बाप बैठ समझाते है कि यह सब क्या है। मनुष्य होकर अपने बाप को नही जानते हो। बाबा
बाप-2 कहे और बाप के आक्यूपेशन को ही नही जाने तो क्या कर हुआ नाँ। बाप कहते है यह सारा
है ड्रामा। बच्चो को बाप समझाते है कि कैसे तुम्हारी दुर्गति हुई है फिर कैसे बाप आकर सदगति करते
है। तो ऐसे बाप की सुननी चाहिये नाँ। सुनेंगे ही नही तो सदगति होकैसे पावेंगे?बहुत समझते है कि
हम तो होशियार है गये है। बाबा तो रोज वो ही ज्ञान देते है। अच्छे-2 बच्चे जिनको 3,4नम्बर
मे रखा जाता है देह का अहंकार आने पर फिरमुरली भी नही सुनते है। बाप स्वंय कहते है कि अच्छे
अच्छे बच्चे भी मुझे कायदे अनुसार याद नही करते है। भूले हुये है। भक्ति मार्ग मे भी जो अच्छे-2 भक्त है
है वो अपने ईष्ट देव को याद करते है। जैसे मीरा कृष्ण को याद करती थी। हनुमान राम को याद
करते थे। भक्ति मे तो सिर्फ दर्शन की ही प्यास होती है।गंगा के पुजारी होंगे,बहुत प्रेम से कहेंगे गंगा
पतित पावनी।...यह है ही भक्ति मार्ग। रावण राज्य। कितने छी-2 मनुष्य है। क्दर सम्प्रदाय।
भगवान कौन है यह भी समझते नही है। तुम्हारे मे भी नम्बरवार जानते है। ऊंच ते ऊंच है भगवान।
अच्छा सूक्ष्म वतन मे ब्रहमा का नाम दे दिया है। अवब्रहमा वहाँ क्या करते है? प्रजा पिता ब्रहमा
तो यहाँ पर चाहिए नाँ। ब्राहमण यहाँ पर चाहिये। रूद्र ज्ञान यज्ञ मे ब्राहमण ही चाहिये। रूद्र तो
ठहरा सेठ। यज्ञ रचने वाला। भल करके निराकार है परन्तु सेठ तो ठहरा नाँ। ज्ञान यज्ञ रचते है ज्ञान
देने के लिये। मनुष्य रूद्र यज्ञ रचते है। एक तो मीठी के सालीग्राम बनाते है। फिर रूद्र पुजा होती है।
मीटी के सालीग्राम बना कर उनकी पुजा आद कर उतपति कर फिर तोड़ फोड़ डालते है। सबकी पुजा
होती है। देवियों की भी ऐसे ही होती है उनको खिला कर पिला कर फिर डुबो देते है।शिव बाबा
को जन्म भी देते है फिर तोड़ फोड़ कर खलास कर देते है। यह है सब भक्ति मार्ग। सालीग्राम आद
तो रोज बनाते है और तोड़ते रहते है। देवियों को फिर ऐसे नही करते है।उनको पिपर 5,7 रोज
रखते है। सालीग्राम तो रोज बनाते है और तोड़ देते है। यह भक्ति मार्ग कितना नानसेन्स मार्ग है
तब ही तो सभी ने दुर्गति को पाया है। सब मनुष्य पत्थर बुधी बन जाते है। सब काम बेअक्ली का ही
करते है। किसीकी भी बुधी मे नही आता है कि हम कर ही क्या रहे है। सालीग्राम [illegible]

भारत मे ही बलाई फैथ गाया जाता है। शास्त्रो मे है नो अन्धो की औलाद अन्धे। अवतुम तो हो भगवान की औलाद। वो है रावण की औलाद परन्तु अपने को कोई समझते थोडेई है। बिलकुल ही बेसमझ है। जैसे छोटे बच्चे गुडियें बना कर फिर तोड़ देते है। उनसे भी बदतर है। इसको ही कहा जाता है अन्धश्रधा की पूजा। कितना खर्चा होता है मन्दिरो आद पर। बाप कहते है कि मै तुमको कितना श्रृंगार बना कर जाता हूं। तुम्हारे मे से भी बाई तो बहुत अच्छा पद पाते है। कोई कम। भल वहां पर सुख सब है परन्तु नम्बरवार पद तो है ना। पुरुषार्थ करना चाहिये ना भविष्य 21 जन्मों के लिये हम ऊंच पद पावेंगे। वो ही फिर कल्प-2 पाते रहेंगे। नो पढ़ने पर नतीजा क्या निकलेगा। वो भी बात बताते है। यह है ईश्वरिय लाटरी। कल्प-2 के लिये पढाई की रेस बनी है। जैसे घुड़दौड़ होती है ना। तुम बच्चो को भी अश्व कहा जाता है। राजस्व अश्वमेध यज्ञ है ना। तुम जानते हो कि इस रथ मे परमात्मा बिराजमान है। रेस भी आत्मा करती है। परमपिता परमात्मा आकर पढ़ाते भी है। रेस भी करवाते है। रेस भी कराते है। यह तुम्हारी रेस एक ही बार होती है। बाप कहते है मनमनाभव। बाप को याद करते रहो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो। बहुत फर्स्ट क्लास लाटरी मिल जावेगी। 21 जन्मों के लिये तुम एवर हेल्दी और एवर वेल्दी बन जावेंगे। सजा खाने वाले का पद ही भ्रष्ट हो जाता है। ऐसी पढ़ाई पढ़ते हुये भी फिर पढ़ाई छोड़ देते है। ध्यान ही नही देते है। कई तो समझते है कि वो ही बाते है। 5, 7 रोज अगर मुरली नही पढी तो हर्जा ही क्या है। परन्तु बाबा कहते है कि कब-2 मुरली मे पुआइन्टस ऐसे-2 निकलते है जो एक दम खड़े हो जाते है। इसलिये ही बाबा ताकीद करते है कि जो-2 अच्छे-2 बच्चे है उनको तो मुरली रेग्यूलर पढ़नी चाहिये। स्कूल मे कब-2 जावेंगे तो बाप भी और टीचर भी क्या समझेंगे। कहेंगे यह तो मूर्ख बच्चा होतो जो पढ़ता ही नही है। तकदीर मे नही है। बाप तो तदबीर करवाते है। बाप आकर बच्चो को शिक्षा देते है। युक्ति रचते है। बाप समझाते रहते है कि जो भी कोई आवे तो उनको बाप का परिचय दो। यहां पर भक्ति की तो बात ही नही। हम लोग कब भी शिवाय वा कृष्णाये नमः आद नही कहेंगे। कब भी मन्दिर मे नही जावेंगे। घण्टा आद नही बजावेंगे। आगे तो सब करते थे। अब भक्ति पुरी हुई है। बाप ने कहा है कि अभी मै तुमको भक्ति का फल देने आया हूं। भक्ति से है दुर्गति। ज्ञान से है सदगति। भक्ति से ही भारत ने दुर्गति को पाया है। पुकारते है कि हे बाबा हम पतित बन गये है। आप पावन बनाने आओ। शिव जयन्ति भी भारत मे ही मनाते है। बाप कहते है कि अब तो मै यहां ही बैठा हूं। बाहर भी कहने जा नही सकता हूं। यह मधुबन कुटिया ************ छोड़ कर बाहर जाने का हुक्म भी बन्द होता जाता है। जिनको लेना होगा वो आ जावेंगे। बीच खुद पढ़ कर पढा कर ले आते है। हेड आफिस मे। यह ठीक है। बाबा कहते है कि दरवाजे से बाहर भी नही निकलो। क्योंकि बन्धु बांधव। होते है ना। समझते है कि इनको सिखाने वाले को तो गोली मार देवें। ऐसे-2 खयलात से भी आते है। शूट करने मे देरी थोड़ेई लगती है। बापू गांधी को भी शूट कर दिया। शिव बाबा कहते है कि मै बापू हूं मुझे तो शूट कर नही सकेंगे। तुमको शूट कर लेंगे। क्रोधी तो बहुत ही होते है ना। कहते थे कि इनको (ब्रह्मा) कोई मार दिखवे तो 5000 रूपया देंगे। ऐसे बहुत हिम्मत से मार दिखाते है। बाप समझाते है कि यह है ही आसुरी सम्प्रदाय। किसीको भी मरवाने मे देरी नही करते है। अकासुर, बकासुर यह सभी अभी के ही नाम है। बाप का बन फिर भी असुर बन जाते है। खून से लिख कर भी देते है फिर 5, 7 रोज मे देखो तो है ही नही। इस समय तो तमोप्रधान माया है। बाप भगवान हमको पढ़ाते है कि कितनी खुशी होनी चाहिये। भगवानोवाच भी है नो सिर्फ नाम बदली कर दिया है। कहते है कि मै इन साधुओं का भी उद्धार करने आता हूं। साधु लोग यह अक्षर पढते भी है परन्तु सह थोडेई समझते है कि यह हमारे लिये ही है। कि हम ही पतित है। बाप को आकर हमारा उद्धार करना है। जरा भी अपने को पतित नही समझते है। बाप कहते

यह सब है भक्ति सिखाने वाले। उनसे मुक्ति धाम में कोई जा नही सकते। मैं से मिल नही सकते। मनुष्य तो सिर्फ कह देते है कि फलाना पार निर्वाण गया। लीन हो गया। कृष्ण के भक्तो से कृष्ण के लिये पूछते है तो कहते है कि वो तो है ही है। जिधर भी देखो कृष्ण ही कृष्ण है। राधा के भक्त फिर कहेंगे कि जिधर देखो राधा ही राधा है। एक तरफ कहते है कि सब ईश्वर ही के रूप है। वो हो गया निराकार। फिर दूसरी तरफ कृष्ण साकार के लिये कह देते है। जिनसे जो मत मिली उसी को फालो कर लेते है। अब कहते है मानव मत। बाकी आसुरी मत है और क्या कराती है। काली का चित्र कितना भयानक है। बस काली माँ काली माँ कह कर एकदम मस्त हो जाते है। काली के बहुत भक्त है। बकरे की वहाँ पर बलि चढ़ती ही रहती है। भारत को ही आदम खोर भी कहा जाता है। क्रिश्चनस लोगो ने आ कर एक दम आदम खोरी बन्द कर दी। नही तो बहुत मनुष्यों की बलि चढ़ाते थे। तो बाप समझाते है कि कितने धर्म भ्रष्ट कर्म भ्रष्ट बन गये है। मेरा जन्म ही मगध देश मे होता है। जहाँ के मनुष्य भी मगर मच्छ सदृश होते है। गऊ का मांस भी खाते है। बहुत बड़े-2 आदमी भी खाते है जैसे कि वहाँ की रसम ही होगी। उस पर ही चलना पड़े। कोई ईरान का बादशाह ही आवेगा तो उनकी क्या खातरी करेंगे? तुमको मालूम है? सारा का सारा ऊँठ कमाल कर मिर्च मसाला डाल कर वो सारा उनके खाने के लिये जा कर रखेंगे। ऐसी गन्दी दुनियाँ है कि बात मत पूछो। अखबार मे पढा था कि भूख लगी तो एक कुत्ते को ही खाने लगा। भूख लगी तो फिर क्या करेगा? जो आया सो ही खाया। खाना नही मिलेगा तो एक दो को काट कर भी खावेंगे। लडाई मे और कुछ नही मिलता है तो अपने घोडे को भी मार कर खा कर अपना-2 पेट भर लेते है। अब तुम अपने स्वर्ग को याद करो। तुम स्वर्गवासी थे फिर 84जन्मो बाद अब नर्कवासी हो। अब तुम संगम पर हो। फिर स्वर्गवासी बनना है। एक ही घर मे एक स्वर्गवासी बनेगा और सम्बन्धी नर्कवासी बनना ही पसन्द करेंगे। बाप को भी नही जानते है। बाप बच्चे को कहेंगे कि पवित्र बनो। एकदम ही कह देंगे कि हम नही बनेंगे। कुछ बाप होगा तो फट कह देंगे कि ऐसे कहा तो टंग टांग तोड़ दूंगा। ऐसे भी कह देते है। कोई ज्ञान लेते-2 फिर गुम हो जाते है। पढ़ते ही नही है। रोज मे एक ही बार आते है। बाप कहेंगे कि तुम तो बहुत कपूत हो। नही पढ़ेंगे तो जरूर निन्दा कराते होंगे चलन शैतानी होगी। नो पढ़ेंगे तो पद भी भ्रष्ट होगा। और है जरूती अपना नुकसान करेंगे। पढ़ाई भी बहुत सहज है। सिर्फ अल्फ और बे। बस यही गांठ बांध लो। अच्छा बे भी याद नही पड़ता है तो छोड़ दो। सिर्फ अल्फ को है याद करो। पढ़ेंगे तो अच्छा है पद पावेंगे। योग मे रहने वाले की बुधी मे नालेज भी आटोमेटीक्ली आ जाती है। बाप कहते है कि सिर्फ अल्फ को याद करो। कहते है बाबा हम भूल जाते है। अरे बाप जो तुमको विष्णु पुरी का मालिक बनाते है उनको भूल जाते हो। बेहद के बाप ने तुमको एडाप्ट किया है विश्व का मालिक बनाने। सो बनेंगे तब जब कि उनकी श्रीमत पर चलेंगे। कोई तो 5,7मास भी समझ कर विलायत मे जाते है तो खेल ही खलास हो जाता है। कोई तो फिर बहुत अच्छे नियमों पर भी चलते है। वहाँ नेता अनेक प्रकार के कर सकते है। इसमे कोई पाप नही है। कोई पुछते है कि बाबा रिश्वत बिना काम नही चलता है। फिर यह पाप तो नही है? वो भी करना ही पड़ेगा नही खावेंगे तो तुम्हारी कमाई नही होगी। फिर कोई पद भी नही देंगे। नौकरी ही से निकाल देंगे। रिश्वत खाने वाले तो बहुत होते है ना। युक्तियाँ तो सारी बच्चो को समझाते सिखाते रहते है। राईं रमज बाज तो है ना। तुमको पढ़ा रहे है। बाप आये ही है सबको वापस ले जाने। पहले-2 बात ही यह समझाओ कि यह है ज्ञान। यह भक्ति नही है। हमको ज्ञान सुनाने वाला बाप ही है। लिखा हुआ है गीता ज्ञान दाता शिव भगवानोवाच्य। वो फिर कह देते है कि शिव परमात्मा और कृष्ण दोनो एक ही है। अरे सबका पोजिशन एक ही कैसे हो सकता है। तो यह ज्ञान सारा तुम्हारे पास ही है। ओम